प्रस्तुतकर्ता : डॉ सुनील बहल

कक्षा - 10+1 (विषय-हिंदी)

पाठ - 5 गुरु तेग बहादुर

(जन्म सन् 1621- देहावसान सन् 1675)

गुरु परम्परा में नवें गुरु तेगबहादुर जी को संयम, त्याग, सहनशीलता एवं करुणा के कारण विशेष स्थान प्राप्त है। तत्कालीन भारतीय जन-जीवन के लिए किया गया इनका बलिदान स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है। मीरी और पीरी की तलवारें धारण करने वाले गुरु श्री हरगोबिन्द साहिब के घर माता नानकी जी के गर्भ से इनका जन्म सन् 1621 को अमृतसर में हुआ था। गुरु गद्दी पर बैठने के पश्चात आप कई गुरु धामों की यात्रा करते हुए कीरतपुर साहिब पहुँचे। सन् 1666 ई. में इन्होंने पहाड़ी राजाओं से भूमि खरीदकर आनन्दपुर साहिब नामक नगर बसाया, जो 'खालसा की जन्म भूमि' के रूप में विख्यात है। प्रारम्भिक शिक्षा के साथ इन्होंने अध्यात्म -विद्या तथा शस्त्र विद्या की शिक्षा ग्रहण की। जिस समय गुरु हरगोबिन्द कीरतपुर आ गए, उस समय गुरु तेगबहादुर ने अपने ननिहाल गाँव बकाला(अमृतसर) में ही निवास कर लिया। गुरु हरिकृष्ण के बाद वे गुरु पद पर शोभायमान हुए। इस समय गुरु जी की आयु 43 वर्ष की थी।

औरंगज़ेब के अत्याचार से पीड़ित कश्मीरी पंडित इनके पास रक्षा के लिए आनन्दपुर में आए थे। अपने पुत्र गोबिंद राय (श्री गोबिंद सिंह) की प्रेरणा पर इन्होंने
भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए हँसते-हँसते बलिदान दे दिया। यह बलिदान स्थान दिल्ली में गुरुद्वारा सीस गंज के नाम से प्रसिद्ध है।

गुरु जी एक महान तपस्वी व्यक्ति थे और निरंकार ईश्वर के प्रचारक थे। इन्होंने पंजाबी से प्रभावित ब्रजभाषा में अपनी पद रचनाएँ लिखीं । यद्यपि ऐसी रचनाओं की संख्या सीमित है-- केवल 59 सबद तथा 57 श्लोकों की रचना मानी जाती है, तथापि इनमें मधुरता एवं जीवन सत्य के कारण इन्हें हिन्दी के श्रेष्ठ कवियों में स्थान प्राप्त है। इनकी रचनाओं में जगत की नश्वरता, साँसारिक व्यवहार की कटुता एवं राम नाम की महत्ता निरूपित है; सहजता का प्रत्यक्ष प्रमाण है; बाह्याडम्बरों एवं पाखंडों का विरोध एवं सहज जीवन यापन पर बल दिया गया है। इन्होंने संयम,समभाव, समदृष्टि, प्रभु आसक्ति, सात्विक व्यवहार, चिन्तन शुद्धता एवं मानवतावादी दृष्टि को सर्वोत्तम माना है।।

पाठ परिचय

प्रस्तुत संकलन में गुरु तेगबहादुर जी के श्रेष्ठ पदों को सम्मिलित किया गया है। भक्ति भावना व सांसारिक नश्वरता के साथ-साथ गुरु जी ने मानवीय मूल्यों की स्थापना पर बल दिया है। काम, क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार के बन्धन से मुक्त होकर साधु संगति में लीन होकर व्यक्ति प्रभु को पा सकता है। मानव जन्म
संसार में बहुत दुर्लभ है। फिर इसको व्यर्थ क्यों गँवाया जाए-इसे सार्थक करने के लिए मन को प्रभु में लीन करना आवश्यक है। गुरु तेग बहादुर के काव्य में शांत
रस है- अलौकिक भक्ति के साथ-साथ जीव की माया के बंधन में बंधने की विवशता को ने अत्यंत सहज भाव में व्यक्त किया है। सगल जन्म भ्रम ही भ्रम खोयो-नहिं छूटि अधमाई ‘ में यह पीड़ा स्पष्ट झलकती है इनकी भाषा-शैली के विषय में कहा जा सकता है कि इसमें पंजाबी के साथ-साथ तत्सम व तद्भव शब्दों का प्रयोग भी है। शैली में गेयता का गुण भी विद्यमान है। प्रस्तुत संकलन इनके काव्य के प्रतिपाद्य को भली भान्ति स्पष्ट करने में सक्षम है।

1. साधो मन का मानु तिआगउ॥

काम, क्रोधु,संगति दुरजन की ता ते अहनिसि भागउ ॥रहाउ

सुख दुखु दोनों सम करि जानै अउरु मानु अपमाना ॥

हरख सोग ते रहै अतीता तिनि जगि ततु पछाना ॥१॥

उसतति निंदा दोऊ तिआगै खोजै पदु निरवाना ।। २ ।।

जनु नानक इहु खेलु कठनु है किनहू गुरमुखि जाना ।।

(राग गउड़ी महला-९)

कठिन शब्दों के अर्थ -

मानु-अहँकार,तिआगउ- त्यागो. कामु-काम वासना,अहनिसि - दिन-रात, भागउ- दूर रहो, सम–समान, हरख-सोग -हर्ष व शोक। अतीता-अलग, परे,दूर तिनि-उन्होंने, जगि ततु-संसार का सार। उसतति- प्रशंसा, निरबाना -निर्वाण/ मोक्ष/ मुक्ति

प्रसंग- यह पद श्री गुरु तेग बहादुर द्वारा रचित वाणी के अन्तर्गत 'रागु गउड़ी महला-९' से लिया गया है।

इसमें गुरु जी ने मानव को संसार के विकारों से दूर रहने व निर्वाण पाने की सदैव कोशिश करते रहने का ज्ञान दिया है।

व्याख्या- गुरु तेग बहादुर जी कहते हैं- रे-रे,संसार के मानवो! अपने मन से बसे अहंकार को तुरंत त्याग दो। काम, क्रोध तथा बुरे जनों के साथ से दिन-रात दूर रहो। किसी भी दिन में किसी भी क्षण दुर्जनों की संगति न करो। सुख व दुःख, मान व अपमान को समान रूप से समझो। वे कहते हैं कि जो हर्ष व शोक की भावना से सदा दूर रहते हैं, वे ही संसार के सार को अर्थात सच को जान लेते हैं। जो व्यक्ति प्रशंसा व निन्दा

को त्याग देते हैं, उन्हें ही मोक्ष की प्राप्त होती है। गुरु जी कहते हैं कि हे गुरु नानक के भक्तो ! सुख-दुःख, मान-अपमान में समान रहने का यह खेल बड़ा मुश्किल है। सुख-दुःख आदि की स्थिति में एक समान रहकर जीवन बिताना बड़ा कठिन है। गुरु जी कहते हैं कि कोई विरला गुरमुख ही इस तत्व को समझ सकता है।

अत: गुरु तेग बहादुर जी के अनुसार मानव को मानसिक विकारों से सदा ही दूर रहकर जीवन बिताना चाहिए।

2.अब मैं कउनु उपाय करउ ।
जह विधि मन को संसा चूकै भउनिधि पारि परउ ॥ रहाउ।
जनमु पाइ कछु भलो न कीनो ता ते अधिक डरउ ।
मन बच क्रम हरि गुन नहीं गाए यह जीअ सोच धरउ ॥1॥
गुरमति सुनि कछु गिआनु न उपजिओ पसु जिउ उदरु भरउ ॥
कहु नानक प्रभ बिरद् पछानउ तब हउ पतित तरउ 1॥

(धनासरी महला)

कठिन शब्दों के अर्थ-

संसा - संशय/वहम ,चूकै - मिटे,भउनिधि - भवसागर, ता ते - इस से, वच -वचन, क्रम- कर्म, उदरु-पेट, विरद - विद्वान

प्रसंग- यह पद श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी रागु धनासरी महला-९ में से लिया गया है।

इस पद में गुरु जी ने गुरूपदेश के महत्व पर प्रकाश डालते हुए उसे संसार रूपी सागर से पार उतारने वाला कहा है।

व्याख्या-गुरु तेग बहादुर जी कहते हैं कि एक न एक दिन मानव विचार करता है कि अब मैं कौन-सा उपाय करूँ, जिससे

मेरे मन का संशय दूर हो जाए और मैं संसार रूपी सागर से पार हो जाऊँ। मैंने मानव जन्म पाकर भी सत्कर्म नहीं किए। इसी कारण मैं अधिक भयभीत हूँ। मैंने मन, वचन और कर्म से प्रभु के गुणों कि स्तुति नहीं की । यही मेरे मन में विचार आ रहा है। मेरे मन में गुरु के उपदेश को सुनकर भी कुछ समझ नहीं विकसित नहीं हुई । मेरा जीवन तो पशु-तुल्य ही रहा जो मात्र पेट भरना ही जानता है। गुरु तेग बहादुर जी कहते हैं कि ईश्वर को कोई समझदार विद्वान् ही पहचान सकता है। तभी पतित इस भवसागर से पार हो सकता है।
अत: इस भवसागर को पार करने के लिए गुरूपदेश पर चलना अति आवश्यक है।

3.मन की मन ही माहि रही।
ना हरि भजे न तीरथ सेवे चोटी काल गही ॥ रहाउ।।
दारा मीत पूत रथ संपति धन पूरन सभ मही ॥
अवर सगल मिथिआ ए जानऊ भजनु राम को सही ।
फिरत फिरत बहुते जुग हारिओ मानस देह लही।
नानक कहत मिलन की बरीआ सिमरत कहा नहीं ।

(सोरठि महला ९)

कठिन शब्दों के अर्थ- चोटि-बाल, काल- मृत्यु,गही -पकड़ी, दारा-पत्नी, अवर-अन्य/ दूसरा सकल-समूचा /सारा/ सब कुछ, लही-ली, मिली, बरीआ- मौक़ा/अवसर
सिमरत-स्मरण।

प्रसंग- यह पद श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी रागु सोरठि महला-९ में से लिया गया है। इस पद में गुरु जी द्वारा प्रभु-नाम-स्मरण पर बल दिया गया है।

व्याख्या-गुरु तेग बहादुर जी कहते हैं कि एक न एक दिन मानव विचार करता है कि मेरे मन की बात या इच्छा मन में ही रह गई। क्योंकि जीवन में मैंने परमात्मा का स्मरण नहीं किया और मृत्यु ने आकर मेरी चोटी अर्थात मुझे बालों से पकड़ लिया। पत्नी, मित्र, पुत्र, रथ, संपत्ति धन मुझे सब कुछ प्राप्त था किन्तु मैंने परमात्मा का भजन नहीं किया। मैंने जान लिया कि परमात्मा का स्मरण ही सच है और दूसरी सारी बातें तो झूठ हैं। मुझे परमात्मा की कृपा से मानव शरीर मिला था और मुझे परमात्मा का भजन करना चाहिए था। मैंने ऐसा न किया और मुझे भटकते-भटकते काफी समय बीत गया।

गुरु जी कहते हैं कि हे मानव ! परमात्मा से मिलने के लिए मानव जीवन का लाभ उठाते हुए तुम ईश्वर के नाम का स्मरण क्यों नहीं करते?

अत: मानव को मनुष्य देह पाकर तो ईश्वर का स्मरण/ भजन करना चाहिए।

4.माई मैं किहि बिधि लखऊ गुसाईं।
महा मोह अगिआन तिमरि मो मनु रहिओ उरझाई ॥ (रहाउ)
सगल जनम भरम ही भरम खोइओ नह असथिरु मति पाई॥
बिखिआ सकत रहिओ निस बासुर नह छूटी अधमाई ॥१॥

साध संगु कबहु नहीं कीना नह कीरति प्रभ गाई ॥
जन नानक मैं नाहिं कोऊ गुनु राखि लेहु सरनाई ॥२॥

(सोरठि महला ९)

कठिन शब्दों के अर्थ-

माई-माँ/प्रभु,लखऊ -दर्शन करूँ, गुसाईं - ईश्वर,तिमिर-अंधकार। बिखिआ सकत-विषय वासनाओं में लिप्त, निस-वासुर-रात-दिन,अधमाईं-नीचता,कीरति-यश

प्रसंग- यह पद श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी रागु सोरठि महला-९ में से लिया गया है। इस पद में गुरु जी ने ईश्वर से प्रार्थना की है कि परमात्मा मानव को अपनी शरण में ले लें ।

व्याख्या-गुरु तेग बहादुर जी कहते हैं कि एक न एक दिन मानव विचार करता है कि हे माँ अर्थात ईश्वर ! मैं किस प्रकार प्रभु के दर्शन पाऊँ। महामोह और अज्ञान के अन्धेरे में मेरा मन उलझा हुआ है। मैंने अपना सारा जन्म भ्रम में भटकते हुए व्यतीत कर दिया। इस भ्रम को समाप्त नहीं किया,जिसके कारण मेरी बुद्धि स्थिर न हो सकी। मैं रात-दिन विषय वासनाओं में ही डूबा रहा। मेरी नीचता दूर नहीं हुई। मैंने आजीवन कभी भी सज्जनों का साथ नहीं किया और न ही ईश्वर का गुणगान किया। गुरु तेग बहादुर जी कहते हैं कि मनुष्य प्रभु से कहता है कि वह कितना ही बुरा है, फिर भी आप मुझे अपनी शरण में अवश्य ले लें।

5.साधो गोबिन्द के गुन गावहु।
मानस जनमु अमोलकु पाइओ बिरथा काहि गवावहु ।। रहाउ॥
पतित पुनीत दीन बंध हरि सरनि ताहि तुम आवहु ।।

गज को त्रासु मिटिओ जिह सिमरत तुम काहे बिसरावहु ॥१॥
तजि अभिमान मोह माइआ फुनि भजन राम चितु लावऊ ॥
नानक कहत मुकति पंथ इहु गुरमुखि होइ तुम पावउ ।। ॥२॥

(राग गउड़ी, महला ९)

कठिन शब्दों के अर्थ-

गोबिन्द - ईश्वर,अमोलकु -अनमोल, अमूल्य, बिरथा-नाहक/ व्यर्थ, पुनीत-पवित्र,दीन-बन्धु-प्रभु,सरनि- शरण में, गज- हाथी, त्रास -दु:ख, बिसरावहु- भूलता है, फुनि -पुन:/फिर, गुरमुखि- गुरु का शिष्य

प्रसंग- यह पद श्री गुरु तेग बहादुर द्वारा रचित वाणी 'गउड़ी महला-९' से लिया गया है। इसमें गुरु जी ने मनुष्यों को उपदेश दिया है कि मानव जीवन को व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए।

व्याख्या- गुरु जी कहते हैं- हे प्रभु के भक्तो ! तुम प्रभु का गुणगान करो। यह मनुष्य-जन्म बहुत ही अनमोल है, अत: इसे नाहक ही सांसारिक विषयों में पड़कर क्यों गँवा रहे हो।हे मानव ! तुम्हें पावन प्रभु, पतित लोगों का उद्धार करने वाले दीनदयाल की शरण में जाना चाहिए। प्रभु-स्मरण करते ही उसने हाथी को मगरमच्छ के मुँह से छुड़ाकर उसका दु:ख दूर कर दिया था। ऐसे पतित पावन परमात्मा को तुम क्यों भुला रहे हो। अरे मानव ! तुम अपने मन को अहंकार एवं मोह-माया से मुक्त करके फिर से प्रभु-स्मरण करने में लगाओ । श्री गुरु जी के अनुसार यही मुक्ति का मार्ग है, इसलिए गुरु का शिष्य बनकर तुम इसे प्राप्त कर सकते हो।

अत: मानव जन्म अनमोल है। इसे सांसारिक विषय-वासना में पड़कर नहीं गँवाना चाहिए।

अभ्यास के प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न 1. गुरु तेग बहादुर जी के अनुसार गुरमुख में कौन-कौन से गुण होने चाहिए ?

उत्तर-गुरु तेग बहादुर जी के अनुसार गुरमुख को अहंकार,विषय वासनाओं, बुरे लोगों की संगति से दूर रहना चाहिए। सुख-दुख, हर्ष-शोक को एक समान समझने वाला होना चाहिए तथा उसे प्रशंसा और निन्दा की चिंता नहीं करनी चाहिए।

प्रश्न 2. 'कहु नानक प्रभु बिरद पछानउ तब हउ पतित तरउ' का भावार्थ स्पष्ट करें।

उत्तर- इस पंक्ति से अभिप्राय है कि कोई विद्वान् पुरुष का उपदेश ही पतित को इस भवसागर से पार उतार सकता है। अत: गुरूपदेश से ही प्रभु-मिलन संभव है।

प्रश्न 3. गुरु जी ने नाम सिमरन पर बल क्यों दिया है ?

उत्तर- गुरु जी का कहना है कि यदि प्रभु-स्मरण से हाथी का का दुःख दूर हो गया था तो हमारा क्यों नहीं होगा। इसलिए अभिमान को छोड़कर प्रभु-स्मरण करना चाहिए।

प्रश्न 4. संकलित पदों के आधार पर गुरु तेग बहादुर जी की भक्ति भावना का वर्णन करें।

उत्तर-गुरु जी की वाणी अनमोल है। गुरु जी ने मनुष्य को अभिमान को छोड़कर, सुख-दुख को समान समझकर जीवन जीने पर बल दिया है। इसके साथ ही उन्होंने अज्ञान के भ्रम

को दूर कर मन को स्थिर करके व विषय वासना का त्याग करके प्रभु की शरण में जाने की भी बात कही है। गुरु जी ने प्रभु-स्मरण पर भी बल दिया है,क्योंकि यही मुक्ति का उचित मार्ग है।

प्रश्न 5. गुरु तेग बहादुर जी ने अपने पदों में सांसारिक नश्वरता का संकेत किया है। स्पष्ट करें।

उत्तर-गुरुजी ने सांसारिक नश्वरता पर अपने अमूल्य विचार दिए हैं। उन्होंने कहा है कि यह मनुष्य-जन्म बहुत ही अनमोल है, अत: इसे नाहक ही सांसारिक विषयों में पड़कर नहीं गँवाना चाहिए। गुरूपदेश पर चलकर ही सांसारिक नश्वरता से मुक्ति पाई जा सकती है।

धन्यवाद

डॉ.सुनील बहल

एम.ए.(संस्कृत,हिंदी),एम.एड.,पीएच.डी (हिंदी)